MAA OMWATI DEGREE COLLEGE, HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

SUBJECT	**:**	**Hindi (Samkalin Hindi Kavita)**
CLASS	**:**	**B.A. 5th Sem**
SESSION	**:**	**2021-2022**

(Mr. Manoj Pandey – Sr. Coordinator) School

Dr manoj Pandey · Asstt professor

M = 9416627638

संयुक्त पाठ्यक्रम

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय और कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय के लिए)

बी०ए० : पाँचवाँ सेमेस्टर

जुलाई २०१३

हिन्दी (अनिवार्य)

समय : ३ घण्टे

कुल अंक : १००
लिखित परीक्षा : ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन : २० अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

- समकालीन हिंदी कविता, (कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रसम्पादित)
- हिंदी साहित्य का आधुनिक काल : कविता
- प्रयोजनमूलक हिंदी : पत्र लेखन, संक्षेपण तथा पल्लवन
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न

खण्ड--क : प्रस्तावित निर्धारित पाठ्यपुस्तक

पंचम सेमेस्टर हिंदी (अनिवार्य) की समकालीन हिंदी कविता पर आधारित पाठ्यपुस्तक (जिसका नामकरण पुस्तक–निर्माण के साथ किया जाएगा) कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रका हिंदी–विभाग तैयार करेगा। कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय के हिंदी–विभाग का दायित्व होगा कि पाठ्यक्रम प्रभावी होने से पहले वह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए ।

प्रस्तुत प्रस्तावित पाठ्य पुस्तक में निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाओं को शामिल किया जाएगा–

१ स० ही० वात्स्यायन अज्ञेय
२ धर्मवीर भारती
३ श्रीनरेश मेहता
४ नागार्जुन
५ रघुवीर सहाय
६ कुँवर नारायण
७ लीलाधर जगूड़ी

निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

पाठ्यक्रम में निर्धारित कवियों के साहित्यिक परिचय, अनुभूतिगत वैशिष्ट्य तथा अभिव्यक्तिगत सौष्ठव पर ही प्रश्न पूछे जायेंगे । कवियों की विशिष्ट रचनात्मक प्रवत्ति पर प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे ।

खण्ड--ख : हिंदी साहित्य का आधुनिक काल : कविता

पाठ्यक्रम में निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

१ भारतेन्दुयुगीन हिंदी कविता की प्रवत्तियाँ
२ द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता की प्रवत्तियाँ
३ छायावाद
४ प्रगतिवाद

Asstt.

B.A IIIrd VI Semester Hindi

NOTES

क्र० सं०		
1	'नदी के द्वीप' कविता का सार	1से2
2	'कितनी नावों में कितनी बार' कविता का सार	3-4
3	'यह दीप अकेला' कविता का सार	5-6
4	'रथ का टूटा हुआ पहिया' का सार	7-8
5	'बादल को घिरते देखा है' कविता का सार	9-10
6	अज्ञेय का जीवन-परिचय व उनकी रचनाओ की विशेषताओ का वर्णन ?	11-14
7	नरेश मेहता का जीवन परिचय व उनकी काव्य गत विशेषताओ का वर्णन	15-18
8	रघुवीर सहाय का जीवन-परिचय व उनकी साहित्यिक विशेषताओ का वर्णन	19-22
9	कुंवर नारायण जी का जीवन-परिचय व उनकी साहित्यिक विशेषताओ का वर्णन	23-26
10	छायावादी काव्य की विशेषतायें	27-32
11	द्विवेदी युग और उसकी काव्य गत विशेषतायें	33-36
12	समकालीन कविता की विशेषतायें	
13	भारतेन्दु युगीन कविता के सुधारवादी पक्ष पर प्रकाश डालिये	37-40

नदी के द्वीप कविता के सार का वर्णन करें

भूमिका :→

'नदी के द्वीप' अज्ञेय द्वारा रचित 'बावरा अहेरी' से ली गई कविता है। इस कविता मे कवि ने समाज और परंम्परा के पारस्परिक संबंधो पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि हम नदी के द्वीप है हम नही चाहते कि नदी की धारा हमे छोडकर बह जाए उसके बिना हम नही रहे सकते नदी हमारा निर्माण करती है नदी हमारी माँ है हम उसकी गोद मे बैठकर ममता का आनंद लेते है। नदी हमे विशाल भूखंड से मिलाती है वह भूखंड हमारा पिता है नदी सदा बहती ही रहे नदी का हर रूप हमे पसंद है अगर नदी मंद गति मे आ जाती है तो हम फिर से अपने रूप मे आ जाते है यहा पर द्वीप व्यक्ति का प्रतीक है और नदी समाज का प्रतीक माना है जल प्रवाह समाजिक परंपरा है व्यक्ति समाज का अंग है वह जिसे समाज का ही युगानरूप प्रदान करता है व्यक्ति समाज से अलग नही रह

2

संस्कृता परन्तु वह समाजिक परम्पराओ से संस्कार ग्रहण कर अपना अलग अस्तित्व रखता है समाज मे आने वाली क्रान्ति से व्यक्ति के जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है परन्तु उस का अस्तित्व समाप्त नही होता समाज उसे पुनः नए संस्कार प्रदान करता है ।

कितनी नावो मे कितनी बार कविता के सार का वर्णन करे ।

भूमिका

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायान 'अज्ञेय' द्वारा रचित कविता 'कितनी नावो मे कितनी बार' सत्यान्वेषण के पथ की उलझनो को विभिन्न प्रतीक के माध्यम को अभिव्यक्त प्रदान करने वाली बात भावपूर्ण कविता है। कवि सत्य की अनेक बार डगमगाती नौकाओ मे बैठकर उसे तलाश करने निकला परन्तु उसे वह एक नन्ही सी किरण के रूप मे धुंधलके मे छुपी हुई उसने सत्य के प्रकाश का एक वृत सा देखा था वह उस अनबुझे सत्य को अनेक बार धैर्यपूर्वक विश्वास से भराकर और कभी-कभी थकी हारी दृष्टि से देखता है कवि को संसारिक आकर्षण रूपी जहाज विपरीत दिशा मे बहुत दुर छोडकर आता है वहा उसे सब कुछ निर्मल कठोर, नग्न ही दिखाई देता है जिसे देखकर वह व्यथित (परेशान) हो उठता है उसे केवल सत्य ही नही बल्कि अंतहीन सच्चाई भी बार-२ उदास व्याकुल और भयभीत कर देती है ~~कवि~~ कई बार -२ अपनी आस्था के प्रति शंकालु हो उठता है क्योकि उसे तलाश है सत्य की जो शाश्वत है सत्य प्रकाशवान है।

P.T.O.

अज्ञेय की कविताओं का सारांश

यह दीप अकेला कविता के सार का वर्णन करें ।

भूमिका

अज्ञेय की पुस्तक 'बावरा अहेरी' से ली गई कविता 'यह दीप अकेला' मे कवि ने अपने पर दीप का आरोप करते हुए स्वयं समाज से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की है वह मानता है उसका दीपक रूपी मन अकेला जल रहा है वह तेल दूसरो के लिए प्रेम भावो से भरा है वह अकेला ही आत्मा गौरव और मस्ती मे पागल है वह समाज से जुड़ने के लिए सभी दीपो को एक ही पंक्ति मे रख देता है ताकि उसका अकेलापन दूर हो जाए। कवि का अन्दर का कवि कहता है कि इस जैसा गोताखोर अर्थात कर्मशील समाज को कहा मिल जाएगा यदि समाज मे कवि को उचित स्थान नही मिला तो वह समिधाओ को सुलगा कर कौन सा हठिला व्यक्ति समाज चेतना जगाएगा समाज को कवि की प्रतिभा का ठीक उपयोग करना चाहिए दीपक को एक पंक्ति मे रख कर उसे सम्मान ~~मिल~~ मिल जाएगा । कवि का हृदय शहद के ~~समान~~ समान है जिसे समय रूपी मधुमक्खी ने संसार के अनेक सदविचारो से इकठ्ठा किया है इसमे समाज के जीवन रूपी कामधेनु अमृत के दूध से सींचित है। इसमे भावनाओ के अन्दर अंकुर उसी प्रकार फूटते है।जिस प्रकार एक बीज अंकुरित होकर सृष्टि को देखता है जिस प्रकार कवि अपने मन की कविता को सुनाने

की सृजन क्षमता प्रदान करे ताकि वह अपनी कविता वह अपनी कविता से समाज का कल्याण कर सके समाज कवि के गर्वीलेपन, मस्ती को न देखे बल्कि उसके अकेलेपन को देख कवि को कविता का उद्देश्य पर इतना विश्वास है वह कभी भी आलोचकों से नही डरा है क्योंकि उसकी कविता की पीड़ा उसके मन ने गाई है कविता से उसके मन उत्साह की कमी नही आई है वह लगातार कल्याणकारी और संवेदनशील कविता लिखता है। उसका जिज्ञासु और संवेदनशील मन सदा समाज के लिए रहा है वह समाज से प्रार्थना करता है कि उसे भी समाज मे जगह देदी जाए ताकि वह भी समाज के लिए कल्याणकारी कार्य कर सके।

रथ का टूटा हुआ पहिया नामक कविता के सार का वर्णन करें।

भूमिका

भारती के काव्य - संग्रह 'सात गीत वर्ष' मे संकालित 'रथ का टूटा हुआ पहिया' शीर्षक कविता एक प्रतीकात्मक कविता है इस प्रतीत को कवि ने महाभारत से लिया है गुरु द्रोणाचार्य ने चक्रव्युह की रचना अर्जुन को मारने के लिए की थी किन्तु उसमे केवल अभिमन्यु ने प्रवेश किया कौरव सेना के सात महारथियो ने उसे घेर कर उसके सारे शास्त्र नष्ट कर दिए तब वीर अभिमन्यु ने अपने टूटे हुए पहिए को अस्त्र बनाया और शत्रुओं का सामना किया कवि ने इस आधार पर इस घटना का प्रतीत ग्रहण किया है रथ का टूटा हुआ पहिया यहा लघु और उपेक्षा मानव का प्रतीत है, बेकार और निरर्थक समझ कर फैक दिया जाता है कवि इस टूटे हुए पहिए के माध्यम से आज संसार मे महापुरुषो का ही नही सामान्य मानव का भी माना है तुच्छ या बुथ समझा जाने वाले सामान्य मानव समाज से यह कहता है कि मेरा अनादर मत करो क्योंकि तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति अथवा वस्तु का भी कोई ना कोई महत्व आवश्य होता है, मेरी उपेक्षा या तिरस्कार मत करो जब कभी संसार को महान शक्तियाँ स्वार्थ मे पकड़कर महान राष्ट्रीय आन्दोलनो को विफल कर देती है तब सामान्य जन ही संगठीत होकर विजय दिलाते है।

धर्मवीर भारती की कविता "रथ का टूटा हुआ पहिया" कविता का सारांश

बादल को घिरते देखा है कविता के सार का वर्णन करे।

भूमिका

कवि नागार्जुन ने अपनी कविता। बादल को घिरते देखा है। मे प्रकृति एव भावनाओ का सुन्दर वर्णन किया है कवि हीमालय को बर्फ से ढकी सुन्दर एव सफेद चोटियो का सुन्दर वर्णन करते है जिन समतल देशो मे वर्षा ऋतु मे उमस हो जाते है तो पक्षियो के समुह हिमालय मे स्थित अनेक झीले की ओर चले जाते है वहाँ वे कडवे - मीठे तुतंओ को खाते है उससे कैलाश पर्वत की गगनचुंबी की चोटियो पर तुफानी हवाओ से गर्जना कर सघर्ष करते हुए बादलो को घिरते हुए स्वयं देखा है कवि हीमलय क्षेत्र की रमणियो के पुष्पो से निर्मित आभुषण प्रेम का भी वर्णन करते है बसंत ऋतु मंद-२ समीर बहाते है चकवा - चकई रात भर अलग होकर विरल वेदना से पीडित है इसी मिलन की वेला मे वे प्रणय - कलह की क्रीडाए करता है देवदार के घने जंगलो मे छोटे-२ बडे अनेक झरने बहते हुए कवि ने इन्हे जंगलो मे रहने वाले किन्नर - किन्नरियाँ की जीवन शैली का भी सुन्दर वर्णन किया है वे अपने वेली मे कमल के फूलो को गुजथी है कानो मे उन्होने नील कमल के कुंडल लटकाए हुए है उनके सुन्दर गलो मे इन्द्र नील के मनको के मालाए है पुरुष वर्ग के लोग सुपारन करने मे मस्त है वे मृगो की छाल पर पालथी मारे बैठे है चाँदी और मणियो से बनी सुपारी

10

सुराही को चंदन से बनी तिपाई पर रखते है। किन्नर जाति के नर जाति की आँखे मे अजीब तरह की मस्ती है वे कोमल और मुलायम आगुलियाँ से बाँसुरी की तान छोड़कर सपूर्ण है कवि ने बर्फ से ढकी हुई घाटिया मे कस्तुरी कीनाभिसुगंध से मस्त हो कर उसे तलाश करने के लिए स्वंय असमर्थ हो जाने कर अपने पर खोजते हुए बताया है अत: मे कवि कालिदास के मेघदुत को मात्र कवि कल्पित बता कर तथा उसे के कुबेर की नगरी अलका, व्योम प्रवाही गंगाजल आदि का अस्तित्व न पाकर यही मानता है कि मेघदुत मात्र कल्पना थी जबकि उसने स्वंय हिमालय की चौटियो पर बादलो को घिरते हुए प्रत्यक्ष देखा है

इसलिए वह कल्पना के स्थान पर यर्थात वर्णन पर बल देता है।

अज्ञेय का जीवन परिचय व उनकी रचनाऐ की विशेषताए

भूमिका

अज्ञेय जी हिन्दी की प्रयोगवादी काव्य धारा के कवि थे इनका जन्म 7 मार्च 1911 ई. मे देवरिया जिले मे स्थित कसया पुरातत्व खुदाई के शिविर मे हुआ था इनके पिता पुरातत्व विभाग मे कार्य करते थे इनके पिता का नाम हीराचन्द शास्त्री था इनकी प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत अध्ययन से उ घर मे ही आरम्भ हुई अपने पंजाब विश्व विद्यालय से मिट्रिक की परीक्षा पास की और विज्ञान पढने के लिए मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज मे भर्ती हुए लौहार के फर्गुसन कॉलेज से बी. ए. सी. की परीक्षा पास की थी फिर अंग्रेजी विषय से एम.ए. के लिए प्रवेश किया 1936 ई. मे जेल भी जाना पडा बाद मे सैनिक नामक पत्रिका का सम्पादक करने लगे और यही पर रामविलस शर्मा, भारतभूषण, अग्रवाल के साहित्यकार के सम्पर्क मे आए इनका देहान्त 4 अप्रैल 1987 ई मे हुआ था।

रचनाए

I काव्य

भगनदूत, चिन्ता, बावरा अहेरी, आंगन के पार द्वार, सन्नाटा बनता हुआ।

2 नाटक उत्तर प्रियदर्शी।

3 कहानी संग्रह

विपथगा परम्परा ये तेरे प्रतिरूप कोठरी की बात, जिज्ञासु, और अन्य कहानियाँ।

5 उपन्यास

शेखर, एक जीवनी, नदी के द्वीप।

5 भ्रमण - वृत्त
अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहासा उछली ।

6 निबंध संग्रह
त्रिशंकु, सबरंग, हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य, सब रंग ।

7 अनूदित
श्रीकान्त, टू इज दि स्ट्रेंजर, कितनी नावो मे कितनी बार पर ज्ञानपीठ तथा आँगन के पार द्वार पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया है।

(साहित्यिक विशेषताएँ)

I जीवन को पूर्णता मे जीने का आग्रह
कवि के रूप मे अज्ञेय जीवन के आस्वादन मे विश्वास करते है परन्तु फिर भी उन्हे अंहवादी नही कहा जा सकता ।

2 व्यष्टि और समष्टि के समन्वय
अज्ञेय को प्राय: व्यक्तिवादी, अहवादी कवि माने जाते है उनकी सुप्रसिद्ध कविताओ मे भी समाज की बातो का मुख्य वर्णन है।

3 प्रणय - भावना
अज्ञेय जी के काव्य मे प्रणय - भावना और विद्रोह के स्वर एक साथ मुखरित है प्रणय बीज उनके काव्य मे अंकुरित हुआ ।

4 दार्शनिकता एवं बौद्धिकता
अज्ञेय बहुत प्रसिद्ध कवि है उन्होंने बहुत से स्थान पर घुमे है और देशो मे भी घुमे हुए है।

5 **लघु कविताओं का सौन्दर्य**

अज्ञेय हिन्दी के प्रथम कवि है जिन्होंने छोटी-2 कविताओं मे गहन जीवन दर्शन तथा गहन अभूमीतयो (अनुभूतियों) को अभिव्यक्ति किया है।

6 **देश-प्रेम की भावना**

अज्ञेय जी के दिल मे देश प्रेम की भावना कूट-2 कर भरी हुई थी। उनकी देश के प्रति आक्रोश मे माध्यम से व्यक्त है।

7 **प्रकृति-चित्रण**

अज्ञेय जी प्रकृति के प्रति आत्मीयता का सर्वत्र बनाए रखा है

8 **संघर्षात्मकता**

अज्ञेय ने अपनी कविताओं मे परिवार, समाज, जीवन मुल्यो की गरिबार जीवन की विषमता को व्यक्त करते हुए।

9 **भाषा शैली**

अज्ञेय जी ने भाषा संस्कार बचपन से पाया था उनकी भाषा व संस्कार सहज हो गया है कि बोझिल महसूस नही होता उनकी कविता एक सजग कलाकार की कविता है। अज्ञेय की भाषा बिम्बात्मक है।

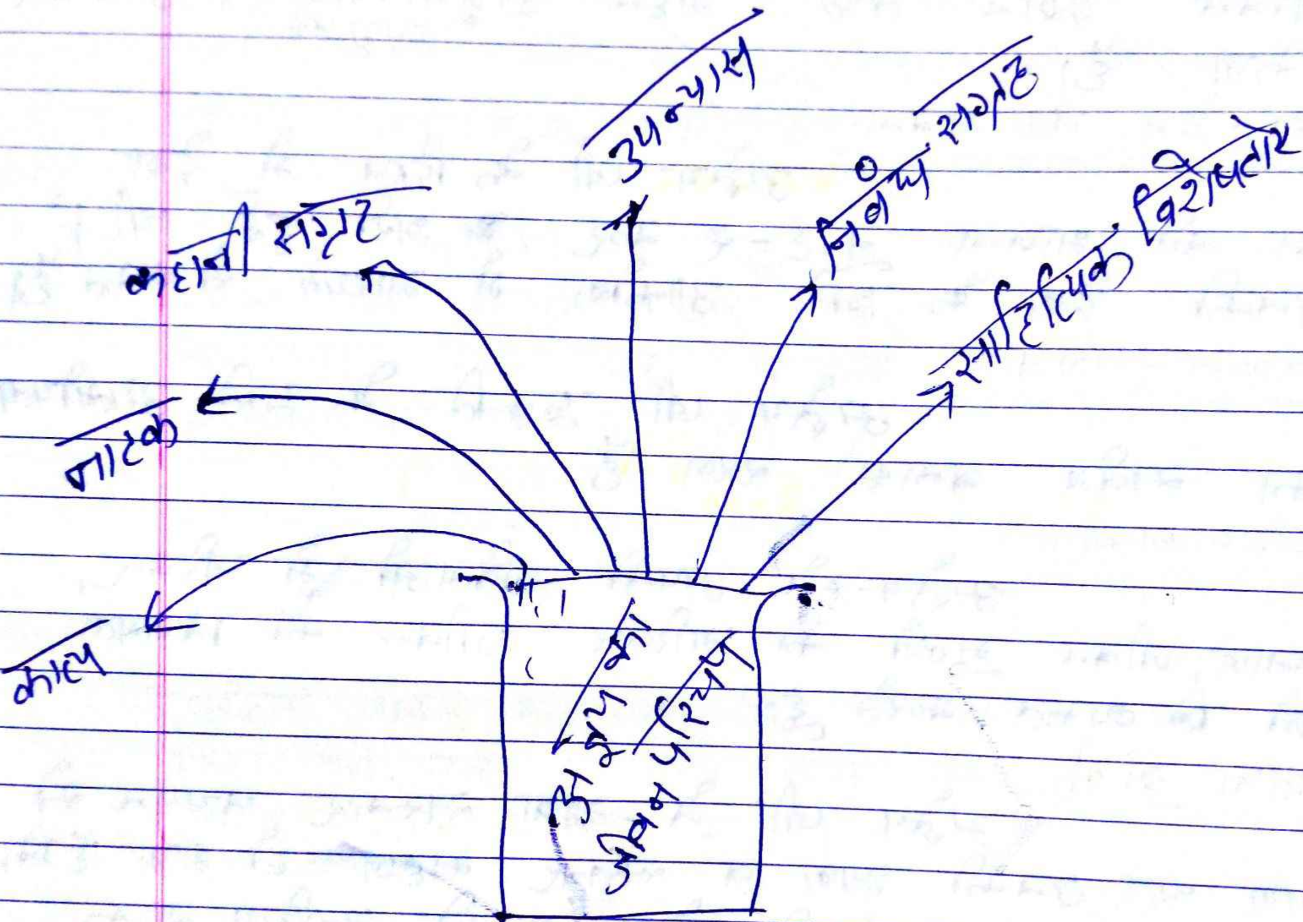
अज्ञेय का जीवन परिचय
काव्य
नाटक
कहानी संग्रह
उपन्यास
निबंध संग्रह
साहित्यिक विशेषताएं

नरेश मेहता जी का जीवन परिचय व उनकी काव्यगत विशेषताए लिखे।

भूमिका

नई कविता के प्रमुख कवि नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी सन 1922 ई. मे मध्यप्रदेश मे मलवा क्षेत्र के राजापुर कस्बे मे हुआ था इनके पिता श्री बिहारी लाल बाल्को एक संपन्न गुजराती ब्राह्मण थे बनारस के हिन्दु विश्वविधालय से एम. ए. करने के पश्चात आकाश वाणी इलाहाबाद मे कार्य किया। इसके बाद मे साहित्यकार भारतीय श्रमिको, कृति, आदि मे पत्र - पत्रिकाओ का सम्पादन किया था इन्हे सुप्रसिद्ध दुसरा सप्तक के प्रकाशन के बाद मिली थी इनका 22 नवम्बर 2000 ई मे निधन हो गया था

1. काव्य संग्रह — बनपाखी सुनो, तुम मेरा मौन हो चैत्या।
2. खण्ड काव्य — शबरी, प्रसाद पर्व, महाप्रस्थान।
3. उपन्यास — डुबते मस्तुल, दो एकान्त, यह पथ बंधु था।
4. एकांकी — सरोवर के फुल, पिछली रात की बर्फ।
5. कहानी - संग्रह — तथापि, एक समर्पित महिला।
6. नाटक — सुबह के घंटे, खंडित यात्राए।
7. संपादन — वाग्देवी गाँधी गाथा।
8. काल यात्रा — प्रदक्षिणा, अपने समय की।

9 **निबन्ध**

हम अनिकेतन, शब्द पुरुष, अज्ञेय काव्यगत का दिक्काल।

10 **यात्रा वृत**

राम फलाश के फूल, साधु न चले जेमात, सिकन्दर की कली।

काव्यगत विशेषताएं

1 **मान - सम्मान एवं पुरस्कार**

नरेश मेहता को साहित्य सेवा के लिए बहुत से पुरस्कारो से सम्मानित किया गया था मंगला प्रसाद, साहित्य अकादमी, ज्ञानदीप आदि पुरस्कार प्राप्त हुए थे

2 **आधुनिक युग बोध के कवि**

कवि ने आधुनिक युग की समस्याओ को अतीत के धरातल पर प्रस्तुत कर उन्हे पाठको तक पहुचायाँ है।

3 **मानवतावाद**

कवि ने मानवतावाद को महत्व देते हुए प्रत्येक मानव को उच्यता प्रदान करने का प्रयत्न किया है

4 **भारतीय संस्कृति के उदघोषक**

कवि ने भारतीय संस्कृति को ही श्रेष्ठ माना था क्योकि वे अहिंसा पर आधारित है

5 **प्रकृति - चित्रण** नरेश मेहता ने अपने द्वारा रचित काव्य मे प्रकृति को बहुत अधिक महत्व दिया था।

6 सामाजिकता

कवि ने समाज को छोटे-बड़े विषयों पर अपनी लेखनी चलाकर व्यक्तिगत स्वमत युद्ध शान्ति सामाजिक शोषण तीर्थ पर्व आदि प्रस्तुत है।

7 प्रेम-भाव की महत्ता

कवि के लिए प्रेम भाव अति कोमल और स्वाभाविक होता है कविता का केन्द्र बिन्दु ही प्रेम है

8 भाषा शैली

नरेश मेहता प्रयोगवादी कवि है उन्होंने प्रसंग के अनुसार अपनी भाषा शैली का प्रयोग किया है उनकी कविताओं मे तत्सम और तद्भव शब्दावली का अधिक प्रयोग हुआ है।

नरेश मेहता के जीवन परिचय का चित्रानुवाद

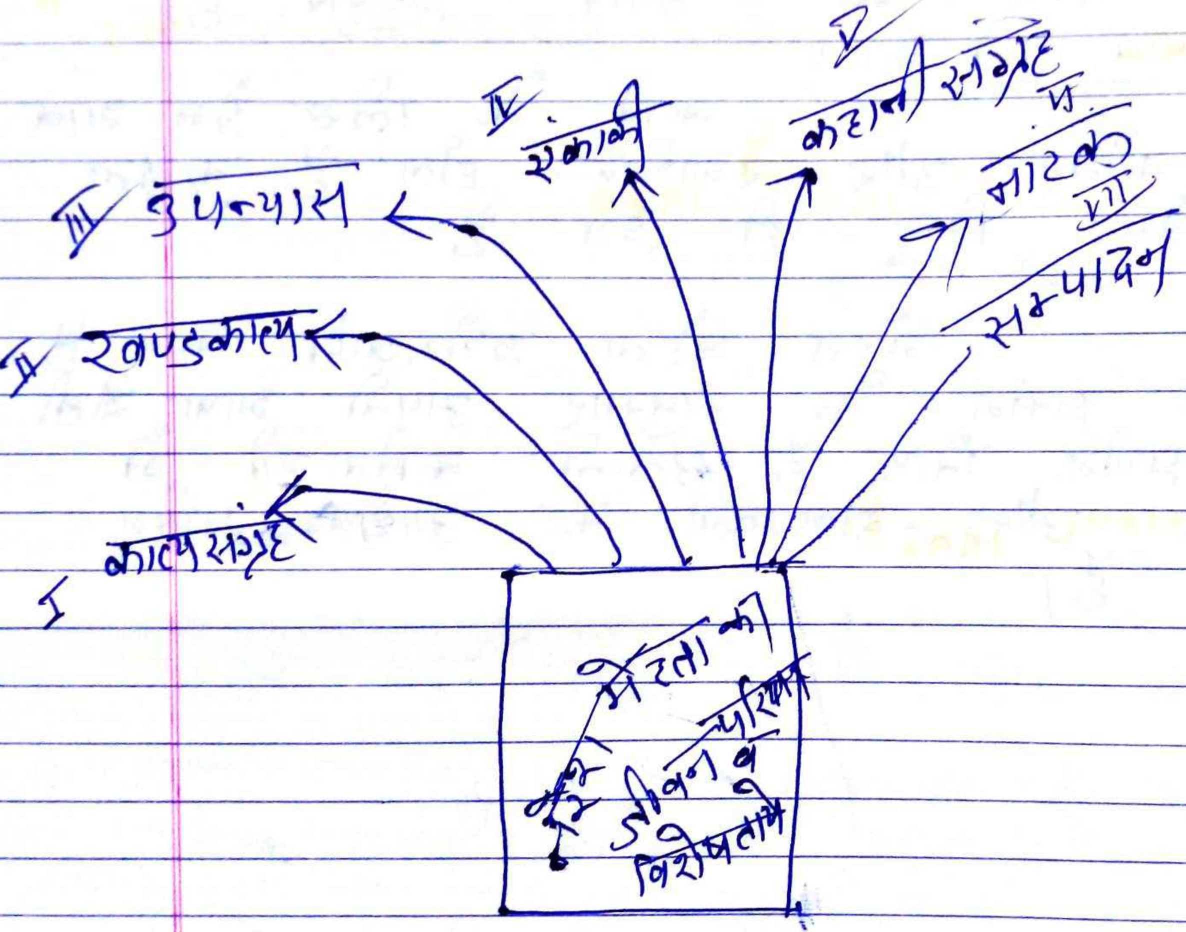

Page No. 19
Date / /

रघुवीर सहाय का जीवन परिचय व साहित्यिक विशेषता लिखे ।

भूमिका

रघुवीर सहाय समकालीन हिन्दी कविता के संवेदनशील कवि है इनका जन्म ~~[illegible]~~ I दिसम्बर 1929 ई० मे उतर प्रदेश के लखनऊ मे हुआ था लखनऊ विश्वविद्यालय से 1951 मे एम० ए० अंग्रेजी विषय की परीक्षा उतीर्ण की इसके पश्चात पत्रकारिता क्षेत्र मे कार्य करने लगे थे। ये 1971 से 1982 तक प्रसिद्ध पत्रिका दिनमान के संपादक रहे। इनको कवि के रूप मे दूसरा सप्तक से विशेष ख्याति प्राप्त हुई इनकी साहित्य सेवा की भावना के लिए साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित किया गया । दिल्ली मे 30 दिसम्बर 1990 ई० मे ये चिर निद्रा मे लीन हो गए थे

रचनाएँ

रघुवीर सहाय हिन्दी साहित्य के सफल कवि है इनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित है—

काव्य - संग्रह

सीढ़ियों पर धूप, आत्मा के विरुद्ध, हंसो हंसो जल्दी हंसो, लोग भूल गए ।

कहानी संग्रह

रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे है।।

निबंध संग्रह

दिल्ली मेरा परदेश, लिखने का कारण, तरंग, ऊबे हुए सुखी ।

अनुवाद

विवेकानंद बारह इंगरी कहानिया जैसे, राख और हीरे, वसम वन ।

काव्यगत विशेषताए

I. समाज का यथार्थ चित्रण

रघुवीर सहाय जी ने समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है सामाजिक अवस्थास्था शोषण भी किया है।

2. अदम्य जिजीविषा का चित्रण

रघुवीर सहाय ने अपने काव्य मे अदम्य जिजीविषा का वर्णन किया है सीढ़ियो पर धूप कविता अदम्य का वर्णन भी पूर्ण है।

3. मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण

कवि ने समकालीन समाज के मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रांकन प्रस्तुत किया है ।

4. [redacted] भ्रष्टाचार का चित्रण

कवि ने समाज मे फैले हुए भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण किया है जिसमे भ्रष्टाचार को ध्वन्यात्म रूप मे अंकित किया है।

5. व्यंग्यात्मकता

रघुवीर सहाय पैनी दृष्टि वाले कवि थे इसकी लेखनी मे पैनी व्यंग्यात्मकता का दृष्टिगोचर होती है समकालीन समाज मे व्याप्त, जीवन, मूल्यो, की गिरावट, कुरीतियो आदि का स्कृति गहन है)

6 राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना

कवि के काव्य में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना का प्रस्फुटन हुआ है इनकी कविता समाज को जागृत करती है।

7 समाजिक विसंगतियों की प्रस्तुति

कवि के पत्रकार होने का कारण समाज को बड़ी निकटता और गहराई से देखा और समझा भी किया था इसने समाज के लिए बहुत कुछ किया था।

8 भाषा शैली

रघुवीर सहाय कला के प्रति सजग कवि है इनकी भाषा में पैनी व्यंग्यात्मकता, सगठित भाषा आधुनिक हिन्दी साहित्य में विशेष पहचान है।

9 अलंकार

रघुवीर सहाय ने काव्य में शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनो का प्रयोग किया है। इनके काव्य में अनुप्रास, यमक, श्लेष, पदमैत्री, स्वरमैत्री उपमा, रूपक एवं उत्प्रेक्षा, प्रश्न आदि का प्रयोग हुआ है।

रघुवीर सहाय के जीवन परिचय का चित्राणुवाद

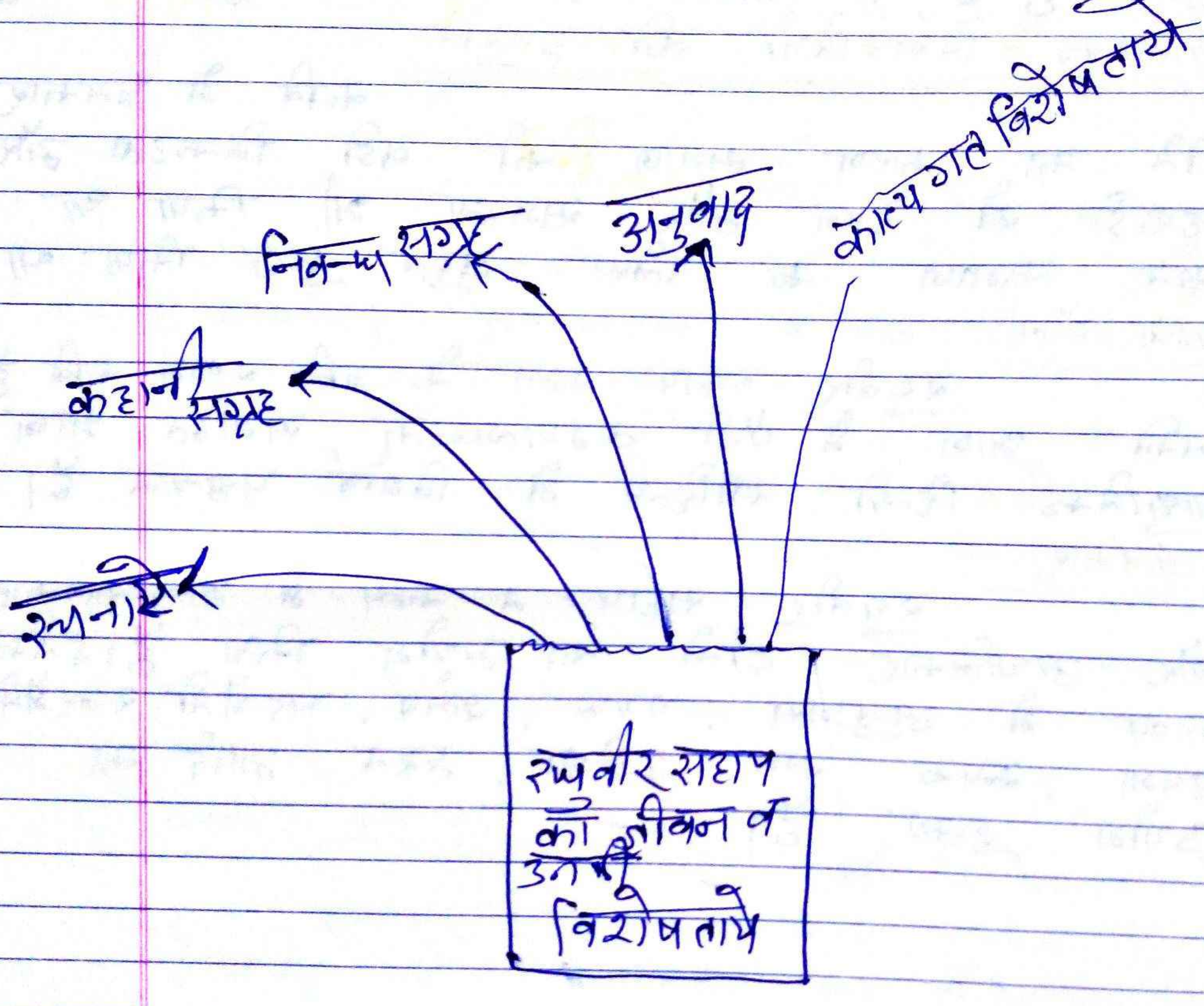

कुँवर नारायण जी का जीवन परिचय व साहित्यकार विशेषताएं का वर्णन करें

Page No. 23
Date / /

भूमिका

कुँवर नारायण नई कविताओं जाने माने कवि है हिन्दी कविता लिखने से पहले अंग्रेजी कविता भी लिखी थी इनका जन्म 19 सितम्बर 1927 ई० मे उतर प्रदेश के फैजाबाद मे हुआ था इंटर विज्ञान विषयों के बाद ये कला के क्षेत्र मे मुड गए इन्होंने ई० मे अंग्रेजी विषय मे लखनऊ विश्वविद्यालय 1951 से उतीर्ण की थी सन 1956 से लेकर बंद होने तक। युग चेतना के सम्पादक मंडल मे कार्य किया था बाद मे ये मोटर व्यवसाय मे लग गए थे आजकल ये पत्नी और पुत्र के साथ दिल्ली मे साहित्य कि सेवा कर रहे है।

काव्य संकलन

कवि ने कवि रूप मे अपनी पहचान अज्ञेय द्वारा सम्पादित । तीसरा सप्तक से बनाई थी इनकी इक्कीस कविताएं है, परिवेश, हम तुम कोई दुसरा नहीं इन दिनों ।

प्रबंध - काव्य

आत्मजयी, वाजश्रवा के बहाने ।

कहानी संग्रह

आकारों के आस-पास ।

साक्षात्कार

मेरे साक्षात्कार ।

आलोचना

आज से आज से पहले साहित्यक के कुछ अन्तर - विषयक संदर्भ ।

पुरस्कार एवं सम्मान

कुँवर नारायण को साहित्य सधना के लिए हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार, साहित्य अकादमी, इन्हें २००९ मे भारत सरकार के द्वारा पदमभूषण पुरस्कार भी प्रदान किया गया था।

:- साहित्यक विशेषताए :-

I सजगता

कवि लगभग सारे काव्य मे युग बोध और युगीन समस्याओं के प्रति चेतना दिखाई देता है।

2 आत्मपीडा की अधिकता

कवि का स्वर आत्मपीडा से भरा हुआ है जीवन अकेलेपन और उदासी का है।

3 आस्था और आशावादिता

कवि असीम सता के प्रति आस्था और आशावाद का भाव विधमान है।

4 स्थितियो से जुड़ने की क्षमता

कवि मानता है कि जीवन विषमताओ और समस्याओ से भरा हुआ है फिर भी उसमे जुड़ा जा सकता है।

5 प्रकृति - चित्रण

कुँवर नारायण प्रकृति को न तो उपदेशक के रूपक मे देखता है उसकी सुन्दरता और आकृष्ट होता है।

6 प्रेम- सम्बन्धी भाव

कवि चाहे अज्ञेय, भारती आदि जैसे प्रयोगवादी कवियो के समय के साथ है।

7 वर्तमान के प्रति - आस्था

कवि अस्तित्ववादी है और उसके मन मे वर्तमान की जो महत्ता है वह भूतकाल के प्रति है।

8 सहजता

कवि ने दर्द और घुटन से भरी हुई और हल्के मुड मे भी कविताए लिखी है।

9 भाषा शैली

कवि ने अपनी कविताओ मे नए - २ प्रयोग किया है नए तुक और लय गढे है भाषा मे नया चमत्कार भरा है पुराने शब्दो मे नये अर्थ प्रदान किए है।

कुंवर नारायण के जीवन परिचय का चित्रानुवाद

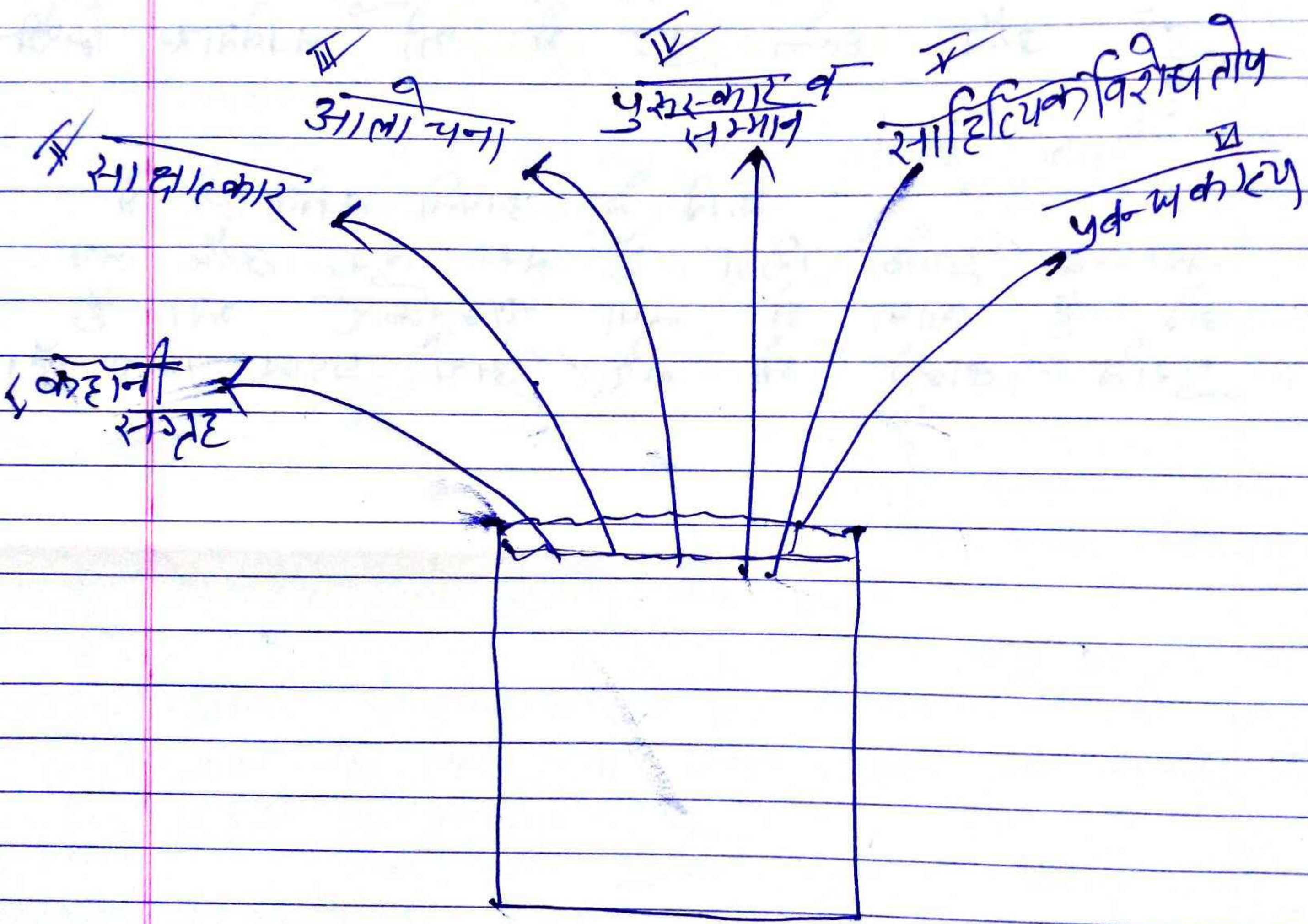

छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएं

भूमिका → छायावादी काव्य क्षेत्र मे एक क्रान्ति था जिसने अभिव्यक्ति भाषा, छन्द, अलंकार, प्रतीक, विधान आदि क्षेत्रो मे परम्पराओ का उल्लंघन करते हुए नवीनता का सृजन किया उसने भाषाओ को नई दीप्ति और कोमलता प्रदान की लेकिन छायावाद के अनेक विरोधीयो ने इस काव्य को स्वप्न जीवी, पलायनवादी, निराशा का प्रचारक, अनैतिक, मानसिक विलाप, पाश्चात्य, काव्य का अनुयायी, दुरूह, अस्पष्ट परम्पराओ का विघातक आदि न जाने क्या - 2 घोषित किया
दो महायुद्धो के बीच की स्वच्छंदतावादी कविता को छायावादी कविता के नाम से पुकारा जाता है लेकिन इस काल से पूर्व भी यह काव्यधारा प्रचलित थी अन्त नरेश छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह मानते है विभिन्न आलोचको और कवियो ने अनेक बातें कही है।

① छायावादी पद्धति विशेष है ② इस मे आध्यात्मिकता होती है ③ यह प्रकृति मे मानवीकरण है ④ यह एक दार्शनिक अनुभूति है ⑤ यह प्रेम और सौन्दर्य सम्बंधी गीति काव्य है ⑥ इसका मुलाधार सर्वात्मवाद है ⑦ यह रूढ़वादी और सम्राज्यवादी बन्धनो के प्रति विद्रोह है।

विशेषता →

① व्यक्तिवाद की प्रधानता →

Page No.
Date / /

आधुनिक युग की अनेक समस्याओं के कारण व्यक्तिवाद का जन्म हुआ और इसी व्यक्तिवाद की मूलभूत प्रवृत्ति भी आधुनिक औद्योगिता से प्रेरित व्यक्तिवाद है इस काव्य मे जाति, महाजाति, महत्वपूर्ण आदर्श का उपास्य व्यक्तियो के सुख दुःख की नही अपितु साधारण व्यक्ति के सुख दुख की बात है कवि विषय - वस्तु की खोज बाहर से नही करता था।

(2) मानवता → छायावाद का सब से उज्जवल पक्ष उसका मानवतावाद है यह युग विश्व - युद्ध और मानवतावाद की भावना का युग है अनेक देशी - विदेशी महापुरुषों मानव - मात्र की समानता का प्रचार कर रहे है प्रसाद की कामायनी और निराला का तुलसीदास इस भावना का सशक्त प्रचार कर काव्य - क्षेत्र मे अवतरित हुए है लगभग सभी छायावादी कृतियो मे राष्ट्रीय पुनरुद्धार की भावना प्रकट हुई है

(3) प्रकृति - चित्रण → छायावादी कवियो का मन प्रकृति - चित्रण मे रमा इन्होने काव्य मे प्रकृति पर चेतना का आरोप किया सभी प्रमुख छायावादियो ने प्रकृति का चित्रण नारी रूप मे किया कामायनी मे प्रसाद जी रात्रि को एक नारी मानते हुए कहते है।

छायावादी कवियो का शृंगारिक चित्रण रीतिकालीन कवियो से भिन्न है इन्होने प्रकृति के माध्यम से श्लील और सात्विक चित्र खींचे पर कहीं-कहीं इन के काव्य ऐन्द्रियता उभर आई है निराला की जूही की कली को भले ही कुछ लोग श्रेष्ठ प्रकृति-चित्रण का उदाहरण मानें

(4) **रहस्यवाद** → सभी छायावादी कवियो ने अपने अपने काव्य मे आध्यात्मिकता को अवश्य स्थान प्राप्त है बाह्य पदार्थों की अपेक्षा इन की प्रवृत्ति आन्तरिक अपेक्षा रही है यह प्रवृत्ति रहस्यो की ओर प्रश्न करती है इन कवियो ने फैशन के रूप मे नाम कमाने के लिए या आन्तरिक अनुभूतियो को प्रकट करने के लिए रहस्यवादी भावनाओ को अभिव्यक्त किया है कवियो ने परमसत्ता को खोजा, महादेवी प्रेम और वेदना की ओर उन्मुख हुई है पन्त ने प्रकृति और निराला ने तत्व ज्ञान प्राप्त किया है।

(5) **स्वच्छन्दतावाद** → छायावादी कवियो ने अहंमवादी व्यक्तिवादी होने के कारण स्वच्छन्दतावाद प्रवृत्ति को ही अपनाया इन्होने अपनी भावाभिव्यक्ति किसी प्रकार के शास्त्रीय बन्धनो को स्वीकार नहीं किया छायावादी कवि के लिए कोई भी वस्तु काव्य-विषय बनाने के लिए उपयुक्त थी।

30

सौन्दर्य और प्रेम - चित्रण, राष्ट्रीय प्रेम, निराशा, सुख - दुख, प्रेम, अतीत प्रतीकात्मकता आदि की प्रवृत्तियाँ इनके परिणाम हैं

(6) वेदना और निराशा →

छायावादी कविता मे करुणा और निराशा सर्वत्र अभिव्यक्त हुई है छायावाद के कर्णधारों के काव्य मे वेदना, सेवावाद मानवतावाद और आध्यात्मवाद पर आधारित है कुछ आलोचकों ने इस निराशावाद को तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलनों और सफलताओं के कारण माना है छायावाद मे आन्तरिकता की प्रधानता राष्ट्रीय आन्दोलनो मे ही बाह्य हलचलो का ही प्रभाव इस पर व्यापक रूप मे पड़ा

(7) आदर्शवाद →

आन्तरिकता छायावाद के प्रमुख गुणों मे से एक है अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के कारण उसका दृष्टिकोण काव्य के भाव - जगत और शैली मे आदर्शवादी रहा है सांसारिक पदार्थों के प्रति सहानुभूति की अपेक्षा उसे अपने प्रति सहानुभूतियाँ अधिक महत्वपूर्ण लगी इसी लिए इस काव्य मे कल्पना और सौन्दर्य तत्व अधिक रहा इनके आदर्शवादी दृष्टिकोणों को उनके कल्पना मे भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

(8) नारी के प्रेम और सौन्दर्य का चित्रण →

छायावादी कवियो ने नारी के प्रेम और सौन्दर्य के अनेक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किए है नारी के सौन्दर्य का चित्रण निम्नलिखित पंक्तियों मे द्रष्टव्य है इसमे प्रेम चित्रण मे भाव - दशाओ का अंकन हुआ है कवियो ने नारी के दया ममता , वासना , सहानुभूति आदि भावनाओ का चित्रण किया है।

(9) ~~स्वच्छ~~ स्वतन्त्रता - प्रेम →

इन कवियो के रूप मे राष्ट्रीय जागरण और स्वतन्त्रता का आह्वान भी सवत्र है पाश्चात्य रोमेन्टिक धारणा के कवियो ने भी रहस्यवाद और स्वच्छन्दता की भावनाओ का सम्मिश्रण किया था इन राष्ट्रीय जागरण की भीड़ गोद मे बड़ने और कवियो के काव्य मे राष्ट्रप्रेम की भावनाओ को पाया जाना स्वभाविक है।

(10) कला - पक्ष →

छायावादी काव्य मे प्रकृतियो का उन्मुक्त चित्रण हुआ पर उस के आलम्बन रूप का वर्णन इस मे वैसा नहीं है जैसा संस्कृत साहित्य मे उपलब्ध होता है इन्होने प्रकृति पर मानवीय भावनाओ का आरोप हुए प्रतीकात्मकता का व्यवहार किया।

32

छायावादी युग का चित्रानुवाद

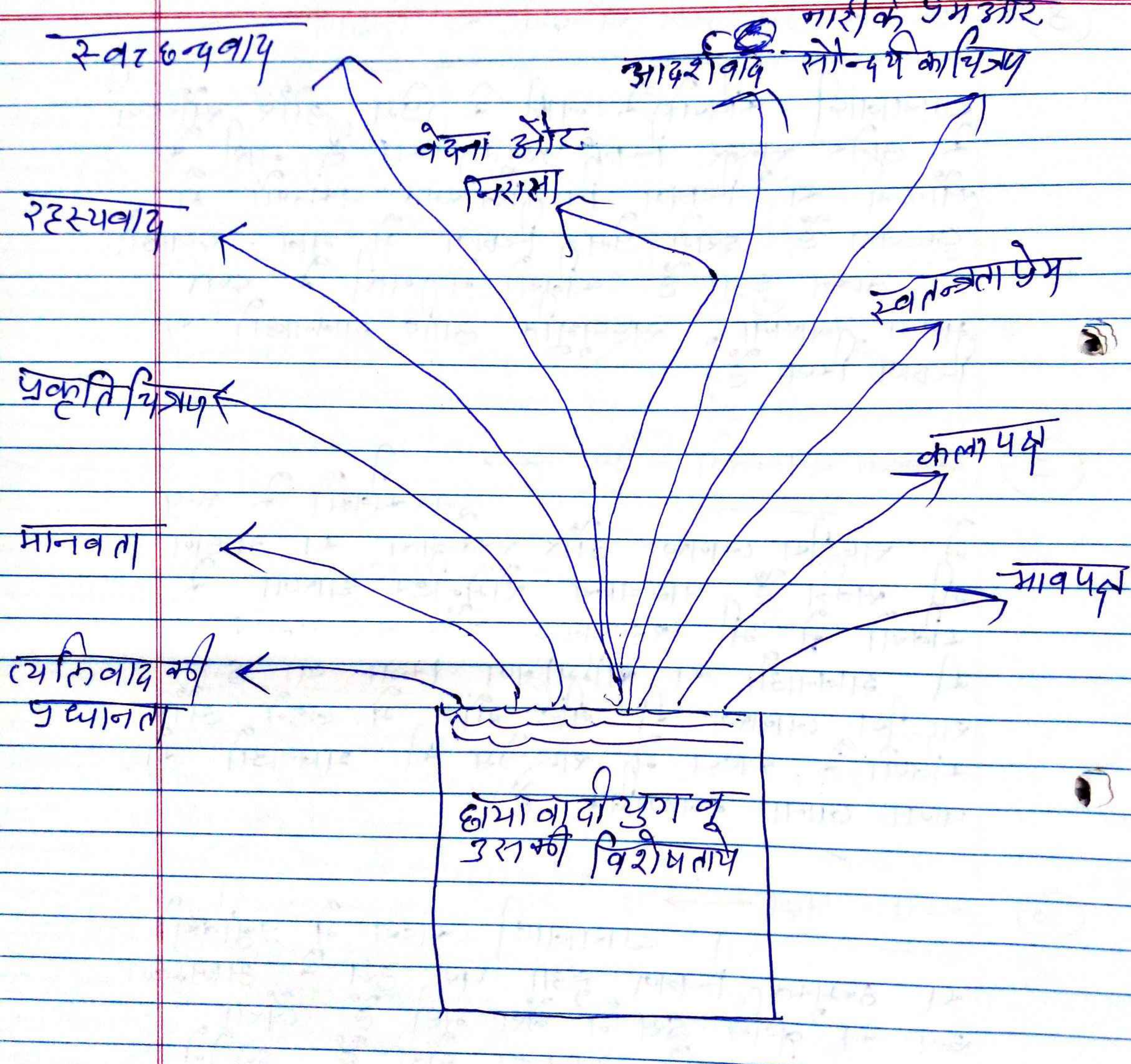

द्विवेदी युग एवं उसकी काव्यगत विशेषताए

भूमिका →
हिन्दी साहित्य के इतिहास मे सम्वंत 1950 से 1975 तक का समय द्विवेदी युग के नाम से अभिहित किया जाता है जिसमे साहित्य चेतना के सूत्रधार महावीर प्रसाद द्विवेदी थे।

(1) **देशभक्ति की भावना** → द्विवेदी कालीन प्रत्येक कवि ने देशभक्ति संबंधि कुछ न कुछ अवश्य लिखा इस युग की राष्ट्रीय भावना जातीयता पर आधारित थी।

(2) **सामाजिकता** →
भारतेन्दु युगीन कविता मे सामाजिक सुधारो खण्डनात्मक स्वर तीव्र था लेकिन द्विवेदी युगीन कविता मे कवियो ने स्वर मे सदभावना गुणनात्मकता का स्वर गूंज उठा।

(3) **प्रकृति - चित्रण** → द्विवेदी युगीन कविता का ध्यान प्रकृति के यथा तथ्य वर्णन की ओर गया विभिन्न कवियो को विभिन्न पक्षो की ओर ध्यान देकर उन्हे विषय बनाता है श्रीधर, पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय आदि है।

(4) **धार्मिकता** →
इस युग मे भगवान के गुणगान

35

Page No.
Date / /

और सैद्धान्तिक व्याख्या के साथ-साथ मानवता के आदर्शों को भी प्रतिष्ठा की गई इनमें पीड़ितो, शोषितो, दुर्बलो, दलितो आदि के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई है।

(5) अतीत का गौरवगान → द्विवेदी युगीन काव्य के गौरवशाली अतीत का गुणगान करते हुए वर्तमान सुधारने हुए उज्जवल भविष्य निर्माण की प्रेरणा दी है।

(6) गांधीवादी विचारधारा → द्विवेदी युगीन कवियो पर महात्मा गांधी की विचारधारा का भी बहुत प्रभाव दिखाई देता है रामनरेश त्रिपाठी, मैथलीशरण गुप्त, गांधीवादी विचारधारा से बहुत प्रभावित थे।

(7) विषय परीधि → द्विवेदी कालीन कवियों ने अनेक नए और साधारण विषयो पर लिखा देश-दशा, समाज-सुधार, स्वदेश-प्रेम, आचारण, त्याग, वीरता, उदारता, सहिष्णुता आदि से सम्बन्धित काव्य की सर्जना की।

(8) इतिवृतात्मकता → द्विवेदी युगीन कविताओ मे

श्रृंगार मुक्तक- काव्य लिखा गया इनके काव्य मे आदर्शवादिता, सात्विकता और संयम के तत्व अधिक है आर्य समाज तथा अन्य संस्थाओ के प्रभाव से साहित्य से अश्लीलता का बहिष्कार किया था।

(10) काव्य - विधाए →

इस काल मे काव्य की सभी विधाओ पर लिखा गया था। मुक्तक खंड- काव्यों और प्रबन्ध काव्यो का प्रणयन किया गया है इन काव्यो पर प्रगीत लिखने मे बहुत सफलता नही मिली।

(11) गीति - शैली →

इस काल की कविता मे गीतिकाव्य की अनेक परम्पराओ पर लोकगीतो का प्रभाव अधिक रहा है समान्यत कव्वाली, कजली, विरह आदि गीति शैली का अनुसरण किया था।

(12) भाषा - संस्कार →

द्विवेदी युग मे खडी बोली को पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त हुई द्विवेदी जी की प्रेरणा से मैथिलीशरण गुप्त ने सर्वप्रथम, जयद्रथ वध, खण्डकाव्य लिखा।

द्विवेदी युग का चित्रणवाद

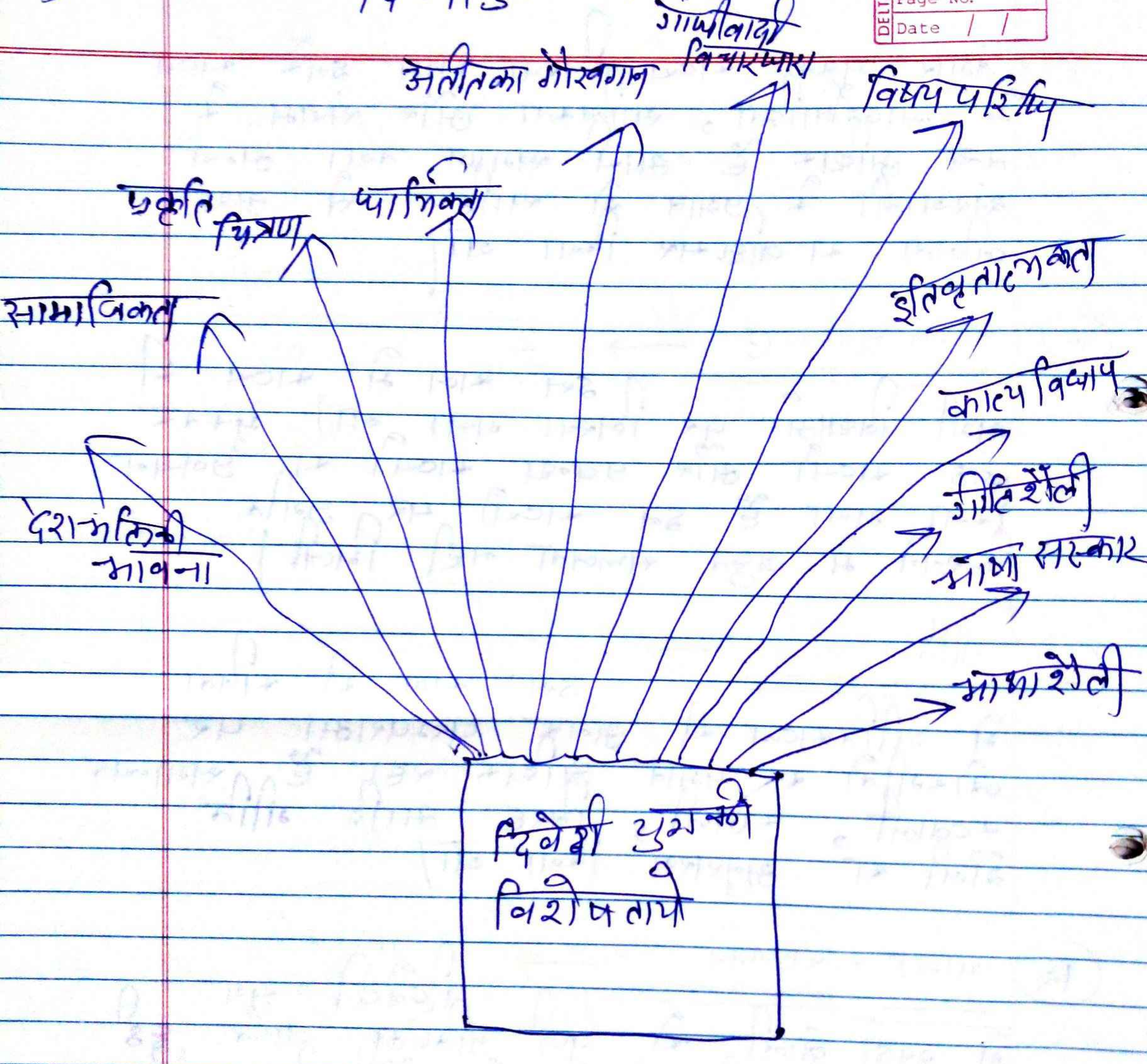

समकालीन कविता की प्रमुख विशेषता

भूमिका →

समकालीन कविता लगभग तीन दशक पुरानी हो गई है इस कविता मे हिन्दी कविता की एक नई पहचान उभर कर सामने आई आधुनिक भारत का चिन्तन भारतीय और विदेशी संस्कृतियो के टकराव का चिन्तन है दुर्भाग्य से स्वतन्त्र भारत की बागडोर उन हाथो मे चली गई है जो पाश्चात्य संस्कृति को पूजते थे भारत मे जब कभी आधुनिकीकरण की बात चली तो बडे शहरो का विकास हुआ है और शिक्षा के स्थान पर अंग्रेजी को फैला दिया गया था और घूसखोरी बडी धीरे-2 आलोक स्तंभ लुप्त होते चले गए और समकालीन कविता का जन्म हुआ और आस्था के स्थान पर अनआस्था और अन्धकार को फैला दिया गया था।

① **विद्रोह और तनाव →**

समकालीन कविता के लिए राजनीति एक सजीव सच्चाई बनकर रह गई है पूरी व्यवस्था भ्रष्ट हो गई है पंचवर्षीय योजनाओ से दो सौ दस अरब से अधिक रुपये फूंकने से भी गरीबी, बेकारी, मंहगाई, भुखमरी, अकाल, बाढ़ जातिवाद, कुर्सीमोह, रक्तबीज की सच्चाई बन है।

② **लम्बी कविताए →**

समकालीन कविता का तथ्य अनिवार्य रूप से लम्बी कविताओ की मॉग

करता है मुक्तिबोध के विषय मे तो कहा गया है कि उसने एक ही लम्बी तथा अधूरी कविता लिखी है लम्बी कथात्मक कविताए तो पहले भी लिखी जाती थी परन्तु कथाविहीन अन्धेरे मे जैसे लम्बी कविताए आधुनिक युग की उपज है।

(3) पौराणिक सन्दर्भ →

समकालीन कविता मे पौराणिक सन्दर्भो को लेकर लिखने वाले अनेक कवि है अज्ञेय असाध्य वीणा, नरेश मेहता, संशय की एक रात, कुंवर नारायण की चक्रव्यूह तथा जगदीश चतुर्वेदी की सुयोधन जैसी की कविताओ को लिया जा सकता है सन 1985 मे प्रकाशित विश्वनाथ तिवारी की कविता टल गया एक महाभारत इस बात का सबूत है।

(4) आम आदमी की पहचान →

समकालीन कविता को आम आदमी की कविता कहा गया है इसमे सर्वत्र आम आदमी की खोज का प्रयास किया गया है लीलाधर जगुडी लिखते है बाहर कहीं से भी देखो आदमी की जात दीली पड गई है।

(5) भाषा आदमी की भाषा →

समकालीन कविता की भाषा अत्यंत सरल एंव दैनिक जीवन

धूमिल की रोटी और संसद कविता समाखयानी की सशक्त कविता है।

(6) **व्यंग्य →**

समकालीन कविता का मूल स्वर व्यंग्यात्मक है कवि समाज की विद्रूपताओं को व्यंग्य के माध्यम से यह व्यक्त करता है इस प्रकार संक्षेप मे कहा जाता है धीरे-2 समकालीन कविता अपनी पहचान बना रही है इस कविता मे जीवन से सीधे टकराने का प्रयास है भाषा एवं शिल्प अकृत्रिम है एवं दैनिक जीवन से जुड़े है।

40

समकालीन कविता की विशेषताओं का चित्रानुवाद

Page No.
Date / /

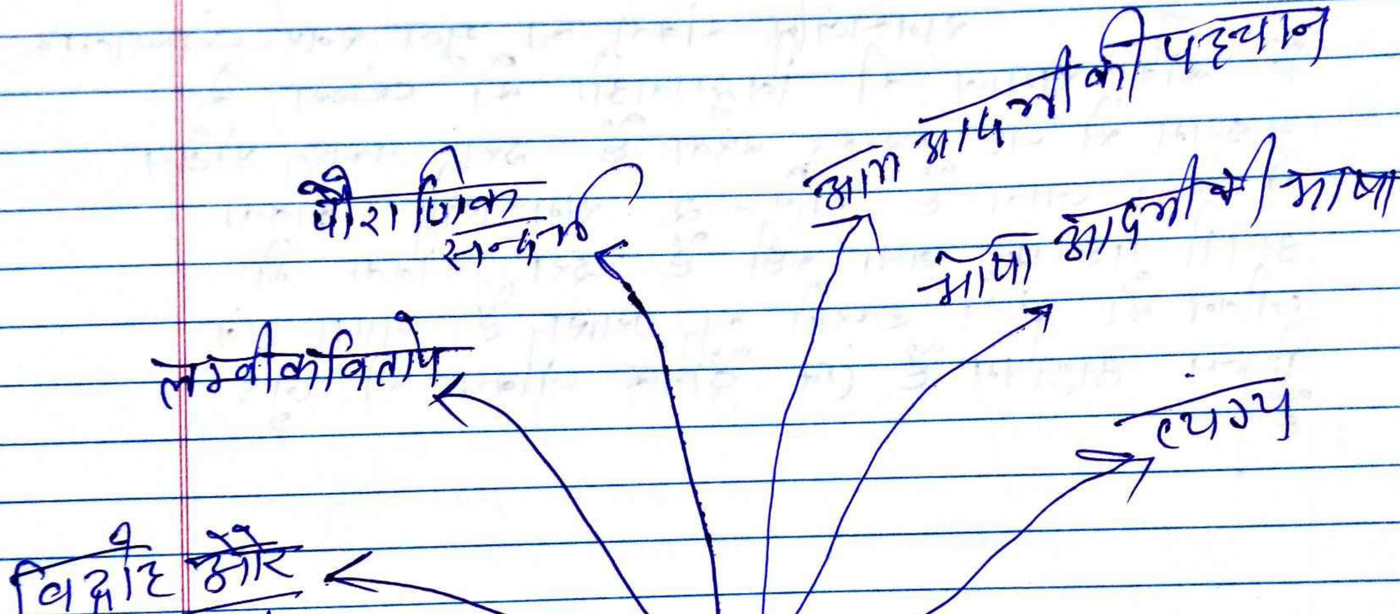

Seen